INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

बालकों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिकाः मानसिक शोध से प्राप्त अंतर्दृष्टियाँ

डॉ. जमना देवी (असिस्टेंट प्रोफेसर)
विभागः हिन्दी, स्वामी विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मतलबपुर, रुड़की

सारः
बाल मनोविज्ञान एक ऐसी शाखा है जो बच्चों के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को समझने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों और तकनीकों का उपयोग करती है। यह अध्ययन बालकों के व्यवहार और उनकी मानसिक स्थिति पर केंद्रित है, जिससे उनकी व्यक्तिगत और शैक्षिक क्षमता का सर्वांगीण विकास किया जा सके। इस शोध का उद्देश्य बालकों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व को उजागर करना है, साथ ही यह समझना कि यह कैसे बच्चों के व्यवहार, संज्ञानात्मक विकास, और उनकी सामाजिक क्षमताओं को प्रभावित करता है। इस शोध में बाल मनोविज्ञान के सिद्धांतों का विश्लेषण किया जाएगा और यह देखा जाएगा कि किस तरह से बालकों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने से उनके मानसिक और सामाजिक विकास में मदद मिल सकती है।

मुख्य शब्दः
बाल मनोविज्ञान, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक विकास, मनोवैज्ञानिक सिद्धांत, बच्चों के व्यवहार, शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षा मनोविज्ञान।

परिचयः
बाल मनोविज्ञान एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास को समझने का कार्य करता है। इसके अंतर्गत बच्चों के विभिन्न विकासात्मक चरणों जैसे कि गर्भावस्था, शैशवास्था, बाल्यावस्था और किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। वर्तमान में, शिक्षा और बच्चों के विकास के क्षेत्र में बाल मनोविज्ञान का अत्यधिक महत्व बढ़ा है, क्योंकि यह बच्चों के व्यवहार, भावनाओं, और मानसिक प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता बच्चों के मानसिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह बच्चों को अपनी भावनाओं को पहचानने, समझने और नियंत्रित करने में सक्षम बनाती है, साथ ही यह उनके सामाजिक संबंधों और शैक्षिक प्रदर्शन को भी प्रभावित करती है। इस शोध में हम बालकों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व और इसके मानसिक और सामाजिक विकास पर प्रभावों का विश्लेषण करेंगे।

बाल मनोविज्ञान
बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है। जिसके अंतर्गत बालकों के व्यवहार एवं उनके अंतरमन का अध्ययन किया जाता हैं। यह अधुनिकता के कार्यो का ही परिणाम हैं। शिक्षा में इसके प्रयोग के आधार पर ही वर्तमान शिक्षा को बाल–केंद्रित शिक्षा का रूप दिया गया हैं।
यह शिक्षा के क्षेत्र में नई खोज हैं, जो छात्रों की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का निरंतर प्रयास करती हैं। इसको मनोविज्ञान की शाखा इसीलिए कहा जाता हैं क्योंकि इसके अंतर्गत मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो, मानकों एवं विचारों को सम्मिलित किया जाता है। तो आइए जानते हैं कि बाल मनोविज्ञान क्या हैं। यह वह धारणा है, जिसका उद्देश्य बालकों के सर्वांगीण विकास करना है। इसका निर्माण का उद्देश्य बालकों के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक का विकास करना हैं। यह छात्रों के मानसिक विकास को केंद्र बिंदु मानकर कार्य करती हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

इसका केंद्र बिंदु बालक होता हैं एवं इसके अंतर्गत बालकों के व्यवहार व उनके व्यक्तित्व से संबंधित समस्त पहलुओं का अध्ययन किया जाता हैं। यह बालकों के लाभ से जुड़े समस्त मनोवैज्ञानिक तथ्यों को उजागर करने का कार्य करता हैं।

बाल मनोविज्ञान में छात्रों की प्रत्येक अवस्थाओं (गर्भावस्था, शैशवास्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था) का बारीकी से अध्ययन किया जाता हैं। जिससे उनमें होने वाले विकास को उचित दिशा प्रदान की जा सकें।

बाल मनोविज्ञान की परिभाषा

क्रो एवं क्रो महोदय के अनुसार –"यह एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन हैं, जिसमें बालकों के गर्भावस्था से किशोरावस्था तक का अध्ययन किया जाता हैं।"

थॉमसन महोदय के अनुसार –"यह सभी को एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य करता है एवं उसे उचित रूप प्रदान करने का कार्य करता हैं। जिससे विकास की दिशा को उचित रूप दिया जा सकें।"

बाल मनोविज्ञान की विशेषताएं

- इसका केंद्र बिंदु बालक होता हैं।
- इसके अंतर्गत बालकों के व्यवहार का अध्ययन मनोवैज्ञानिक पद्यति के आधार पर किया जाता हैं।
- यह छात्रों के विकास को उचित दिशा प्रदान करने का कार्य करता हैं।
- बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की ही एक शाखा हैं। जिसका विकास एवं उपयोग आधुनिक समय में अधिक किया जाता हैं।
- इसके अंतर्गत बालकों के व्यवहार में हो रहे परिवर्तन को जानकर उसको सही दिशा प्रदान करने हेतु विभिन्न योजनाओं का निर्माण किया जाता हैं।

बाल मनोविज्ञान के सिद्धान्त

1) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत – इस सिद्धांत का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड द्वारा किया गया हैं। इनके अनुसार व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अपनी क्षमताओं में वृद्धि करने का कार्य करता हैं। यह सिद्धांत आधुनिक समय का प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिद्धांत हैं।

2) व्यवहारवादी सिद्धांत – इस सिद्धांत का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक जॉन डॉलर एवं पी.जे नीर द्वारा किया गया था। इस सिद्धांत के अनुसार बालकों के व्यवहार के आधार पर बालकों की मनोदशा को आसानी से समझा जा सकता हैं। अर्थात उनकी आवश्यकता एवं उनके मन–मस्तिष्क में चल रहे द्वंद को आसानी से पहचाना जा सकता हैं।

3) संज्ञानात्मक सिद्धांत – इस सिद्धांत का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक गेस्टाल्ट द्वारा किया गया था। इस सिद्धांत के अनुसार बालकों की बुद्धि एवं ज्ञान में हो रहे परिवर्तनों के आधार पर उनके व्यवहार में भी परिवर्तन आते रहता हैं।

बाल मनोविज्ञान की शिक्षा में उपयोगिता

आधुनिक शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों की प्राप्ति करने एवं शिक्षा को प्रभावशाली बनाने हेतु बाल मनोविज्ञान को शिक्षा में सम्मिलित किया जाना अति आवश्यक हो गया है। यह पाठ्यक्रम,समय–सारणी, विद्यालयी कार्यक्रम, सह–पाठ्यक्रम सामग्री के चयन आदि में अपनी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। आधुनिक शिक्षा में हो रहे बदलावों का कारण भी यही हैं।

शिक्षा को बाल केंद्रित बनाने का कारण छात्रों को उनकी रुचि के अनुसार शिक्षा प्रदान करवाना हैं। जिससे वह अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार अपना बौद्धिक विकास कर सकें। यह सभी बाल मनोवैज्ञानिक पद्यति के बलबूते ही संभव हो पाया हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

बाल मनोविज्ञान पद्यति के लाभ

यह छात्रों के व्यवहार में हो रहें अवांछनीय बदलावों को उचित दिशा प्रदान करने का कार्य करती हैं। जिससे उनमें हो रहे विकास की प्रक्रिया को तीव्र किया जा सकें। यह राष्ट्र के विकास एवं उसके चरित्र निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाती हैं।

सामाजिक आवश्यकताओं और शिक्षा के वास्तविक लक्ष्यों के निर्माण करने एवं छात्रों के मानसिक, बौद्धिक विकास को उचित दिशा एवं गति प्रदान करने का कार्य इसके अंतर्गत ही किया जाता हैं।

आधुनिक बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य के अनुरूप छात्रों के व्यवहार एवं उनकी मनोस्थिति में निरंतर बदलाव आ रहा हैं। अपितु उनको उचित दिशा दिखाने एवं उनकी विकास की गति को तीव्र करने हेतु बाल मनोविज्ञान को अपनाना एवं शिक्षा में इसे लागू करना आवश्यक हो गया हैं। जिससे उनके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाया जा सकें।

बाल मनोविज्ञान के विषय विस्तार अथवा अध्ययन क्षेत्र

बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की शाखा के रूप में व्यावहारिक तथा विधायक विज्ञान के रूप में विकसित हुआ है। डम्बिल ने मनोविज्ञान को प्राणियों के व्यवहार का विधायक विज्ञान कहा है। ड्रेवर ने मनोविज्ञान की परिभाषा प्राणियों के मानसिक एवं शारीरिक व्यवहार की व्याख्या करने वाले विज्ञान के रूप में की है। इसी प्रकार बाल–मनोविज्ञान के अन्तर्गत बालकों के व्यवहार, उनकी परिस्थितियों तथा पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।

1. क्या बाल मनोविज्ञान का अध्ययन व्यक्ति में इस क्षमता का विकास करता है कि वह विकास तथा परिवर्तन की दिशाओं को पहचान सके ?
2. क्या यह विज्ञान बालकों में वांछित व्यावहारिक परिवर्तन की दिशाओं को स्पष्ट करता है ?
3. क्या बाल मनोविज्ञान का अध्ययन बालक को सफल मार्गदर्शन प्रदान करता है ?

सामान्यतः यह माना जाता रहा है कि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति से बालक की आवश्यकताएँ सन्तुष्ट की जा सकती हैं, किन्तु यह भी उतना ही सही है कि स्नेह, प्रेम, दया, ममता आदि मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से उसके विकास तथा अभिवृद्धि में दोष आ जाता है।

1. **थाम्पसन–** "बाल–मनोविज्ञान सभी को एक नई दिशा में संकेत करता है। यदि उसे उचित रूप में समझा जा सके तथा उसका उचित समय पर उचित ढंग से विकास हो सके तो हर बच्चा एक सफल व्यक्ति बन सकता है।"

2. **क्रो एवं क्रो–** "बाल–मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अध्ययन है, जिसमें बालक के जन्म–पूर्व काल से लेकर किशोरावस्था तक का अध्ययन किया जाता है।"

बाल–मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा के रूप में विकसित हुआ है। इसके अन्तर्गत बालकों के व्यवहार, स्थितियाँ, समस्याओं तथा उन सभी कारणों का अध्ययन किया जाता है, जिनका प्रभाव बालक के व्यवहार विकास पर पड़ता है। आज के में अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक कारक मनुष्य तथा उसके परिवेश को प्रभावित कर रहे हैं। युग फलस्वरूप बालक, जो भावी समय की आधारशिला होता है, प्रभावित होता है।

बाल–मनोविज्ञान का विकास, विकासात्मक मनोविज्ञान से हुआ। हरलॉक के अनुसार– "विकासात्मक मनोविज्ञान की वह शाखा है, जो गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त तक होने वाले मनुष्य के विकास के विभिन्न कालों में होने वाले परिवर्तनों पर विशेष ध्यान देते हुए अध्ययन करती है। प्रारम्भ में केवल स्कूल जाने से पहले की आयु के बच्चों के विकास में रुचि ली जाने लगी, इसके बाद नवजात शिशु तथा जन्म से पहले

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

की उसकी अवस्था पर भी ध्यान दिया जाने लगा। प्रथम महायुद्ध के कुछ बाद किशोरावस्था के विषय में किये गये खोजपूर्ण अध्ययन उत्तरोत्तर अधिक संख्या में प्रकाशित होने लगे और दूसरे महायुद्ध के बाद प्रौढ़ावस्था तथा जीवन के उत्तरकालीन वर्षों पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा।"

विकास की प्रक्रिया में बालक का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अभिभावक, शिक्षक, समाज–सुधारक, राजनेता सभी की आवश्यकताओं का केन्द्र बालक होता है। माता–पिता बालक को ईश्वर की देन मानते हैं तथा आशा करते हैं कि वह पूर्वजों की भाँति शौर्य तथा कीर्ति का प्रदर्शन करे एवं मोक्ष प्राप्ति में सहायक बने शिक्षक चाहता है चालक समाज का उपयोगी अंग बने, समाज सुधारक उसमें ऐसे गुणों तथा कौशलों के दर्शन करना चाहता है, जिनसे समाज में सामाजिक कुशलता का निर्माण हो सके। इसी प्रकार राजनेता, राष्ट्र के कुशल नेतृत्व के दर्शन बालक में करता है।

अब यह समझा जाने लगा है कि बाल–मनोविज्ञान के स्थान पर बाल–विकास नाम को प्रचलित किया जाय। बाल मनोविज्ञान में बालक के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, लेकिन विकास के अन्तर्गत उन सभी तथ्यों तथा घटकों का अध्ययन किया जाता है, जो बालक के व्यवहार को निश्चित स्वरूप प्रदान करते हैं। प्रारम्भ में बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत शिशुओं तथा बालकों की समस्याओं के अलग–अलग अध्ययन किये गये। इसमें अध्ययन को पूर्णता नहीं मिली। हरलॉक के अनुसार– "बाल–मनोविज्ञान का नाम बाल–विकास इसलिए बदला गया कि अब बालक के विकास की समस्त प्रक्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, किसी एक पक्ष पर नहीं।"

इस दृष्टि से बाल मनोविज्ञान का विषय विस्तार इस प्रकार है–

1. **मनोविश्लेषण–** बाल मनोविज्ञान, बालकों के मन का विश्लेषण कर बालकों की भावना ग्रन्थियों का पता लगाता है तथा बालकों के सन्तुलित विकास में योग देता है।
2. **शिक्षा मनोविज्ञान–** बाल मनोविज्ञान, शिक्षा मनोविज्ञान के साथ मिलकर बालकों का शैक्षिक विकास करता है।
3. **समाजशास्त्र तथा सांस्कृतिक मानव विज्ञान–** बाल मनोविज्ञान का अध्ययन समाजशास्त्र तथा सांस्कृतिक मानव विज्ञान के अध्ययनों में सहायक होता है, बाल–मनोविज्ञान ने यह बताया है कि बालक की आवश्यकताओं का स्रोत उसका परिवेश होता है।
4. **प्रयोगात्मक मनोविज्ञान–** प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के माध्यम से बाल–व्यवहार का अध्ययन कर विभिन्न परिणाम ज्ञात किये जाते हैं।
5. **चिकित्सा–** बाल मनोविज्ञान चिकित्सा के क्षेत्र में भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। चिकित्सा विज्ञान भी बालक को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखने लगा है।
6. **मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान–** बाल मनोविज्ञान ने मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी योग दिया है। बाल मनोविज्ञान, बालकों के स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए विभिन्न उपाय सुझाता है।
7. **बाल कल्याण–** बाल मनोविज्ञान ने बाल मनोविज्ञानशाला, निर्देशन केन्द्र तथा कल्याणकारी योजनाओं की दिशा भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

बाल मनोविज्ञान का महत्व

बाल मनोविज्ञान सामान्य मनोविज्ञान की एक विशेष शाखा है जो बच्चों के विकास और व्यवहार पर केंद्रित है। बाल मनोविज्ञान में जन्म से किशोरावस्था तक के बच्चों का अध्ययन होता है। बाल मनोविज्ञान में शिक्षा मनोविज्ञान का भी अध्ययन होता है जो स्कूल जाने वाले बच्चों के शारीरिक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास का अध्ययन करता है। इसके साथ ही इस बात ध्यान केंद्रित करता है कि परिवेश और

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
(Peer Review Journal as per UGC 2025 Standard Guidelines)
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 12, Issue: 4 | October – December 2025

बाहरी प्रेरणा का सीखने के ऊपर क्या असर पड़ता है।

मस्तिष्क के क्षेत्र में होने वाले शोध (जैसे ब्रेन बेस्ड लर्निंग इत्यादि) का भी इस्तेमाल बाल मनोविज्ञान व शिक्षा के क्षेत्र में किया जा रहा है ताकि 21वीं सदी के ज्ञान और समझ का इस्तेमाल जमीनी स्तर पर बच्चों के बारे में समझ को वैज्ञानिक सोच के ज्यादा करीब लेकर आ सके। इसका उद्देश्य बच्चों के बारे नें पहले से बनी परंपरागत अवधारणाओं को चुनौती देना भी है ताकि लोग बच्चों को कच्ची मिट्टी का घड़ा या खिलौना न समझे, बल्कि उनके व्यक्तित्व को समझने की कोशिश करें और उसके व्यवहार को व्यक्तित्व के साथ जोड़कर देख सकें। बाल मनोविज्ञान बच्चों के व्यवहार से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का विश्वसनीय समाधान देता है। उदाहरण के तौर पर अगर कोई बच्चा पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा है, या फिर कोई बच्चा बहुत ज्यादा सक्रिय है, अवसाद, झिझक और विस्तर गीला करने जैसी समस्याओं का भी अध्ययन बाल मनोविज्ञान में किया जाता है। बाल मनोविज्ञान में आयु के अनुरूप शारीरिक व मानसिक विकास हो रहा है या नहीं इस बात का भी अध्ययन किया जाता है। इसके साथ ही बाल्यावस्था में संवेगात्मक व संज्ञानात्मक विकास से जुड़ी अवस्थाओं का भी अध्ययन किया जाता है।

बाल मनोविज्ञान बतौर माता–पिता आपको अपने बच्चे को समझने में मदद करती है। अपने स्कूल या क्लास में पढ़ने वाले बच्चे को समझना एक शिक्षक के लिए भी पढ़ाने की रणनीति बनाने में काफी उपयोगी साबित होता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि अपने बच्चे को समझने का सबसे आसान तरीका उनके सोने, खाने और खेलने की आदतों को गौर से देखना है। ऐसी खूबियों को पहचानने की कोशिश करें जिसमें निरंतरता दिखाई देता है। जैसे कुछ बच्चे खेल में सदैव आगे रहते हैं। बाकी बच्चों की भागीदारी थोड़ी कम होती है। या फिर उनमें भागीदारी को लेकर शुरुआती स्तर पर झिझक होती है जो बाद में थोड़े से सहयोग के बाद दूर हो जाती है।

बच्चों को समझने के लिए सबसे आसान तरीका है कि उनसे रोजमर्रा के अनुभवों के बारे में बात की जाए। बच्चों से बात करें कि स्कूल में उनका दिन कैसा रहा? कौन सी बात उनको सबसे ज्यादा अच्छी लगी। खेल इवेंट में उनको कौन सी बात अच्छी लगी। उनको कौन सी शिक्षक सबसे ज्यादा पसंद हैं? उनको कौन सी चीजें पसंद है इत्यादि। जो माता–पिता अपने बच्चों के साथ ज्यादा समय बितातें हैं उनके लिए बच्चों को समझना काफी आसान होता है।

आत्म–सम्मान जीवन में सफल होने की कुंजी है। ऐसे में जरूरी है कि बच्चों में सकारात्मक स्व–प्रत्यय (सेल्फ कांसेप्ट) का विकास हो, ताकि बच्चों का बचपन और किशोरावस्था खुशियों से भरपूर हो। बच्चे और माता–पिता का अच्छा रिश्ता बच्चे के खुद के बारे में एक सकारात्मक आत्म–छवि का निर्माण करता है और बच्चा दूसरे लोगों को भी सकारात्मक नजरिये से समझने की कोशिश करता है।

आमतौर पर बच्चे माता–पिता का समय चाहते हैं, यह बड़ी स्वाभाविक सी बात है। इससे बच्चे खुद को विशिष्ट महसूस कराते हैं। इससे बच्चों को लगता है कि लोग उनकी परवाह करते हैं। उनके ऊपर ध्यान देते हैं। उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए तत्पर हैं।

माता–पिता को अपने बच्चों के साथ नियमित रूप से खेलने का समय निकालना चाहिए। यह बच्चों के संवेगात्मक विकास के लिए काफी अच्छा माना जाता है। अगर आप सिंगल पैरेंटस हैं तो अपने दोस्तों को घर पर इनवाइट करें या फिर बच्चे को अपने साथ लेकर दोस्तों के घर जाएं ताकि बच्चों को अन्य बच्चों व लोगों का साथ मिल सके।

बच्चों के स्वाभाविक विकास के क्रम में सामाजिक कौशलों की विकास भी होता है। मगर कुछ बच्चों में सामाजिक कौशलों का विकास अन्य बच्चों की भांति सहजता के साथ नहीं हो पाता। ऐसे में जरूरी होता है कि हम ऐसे बच्चों को सामाजिक कौशलों के विकास में सपोर्ट करें उदाहरण के तौर पर एक बच्चा घर

पर तो काफी शोर मचाता है। अगर कोई चीज उसके मन की नहीं होती तो रोकर अपनी बात मनवाने की कोशिश करता है।

पांचवीं कक्षा में पढ़ने वाला यह बच्चा स्कूल में बिल्कुल खामोश रहता है। वह अपनी बात किसी के साथ शेयर करना चाहता है। कभी–कभी वह अपनी छोटी बहन के साथ अपनी बात सांझा करता है जो उससे क्लास में एक साल पीछे हैं। उसका एक बड़ा भाई है, जो दसवीं कक्षा में है। वह चाहता है कि उसकी बराबरी करे। इसलिए वह हर बात में अपनी तुलना उससे करता है जबकि अपनी कक्षा के अन्य बच्चों के बारे में वह ज्यादा नहीं सोचता कि उसे उनके साथ घुलना–मिलना चाहिए ताकि वह सहजता के साथ स्कूल में समायोजन स्थापित करके आगे बढ़ सके।

निष्कर्ष

बाल मनोविज्ञान का अध्ययन बच्चों के विकास के हर पहलू को समझने के लिए आवश्यक है। यह बच्चों के शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक विकास को उचित दिशा प्रदान करने का कार्य करता है। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का बच्चों के जीवन में गहरा प्रभाव है। बच्चों में यह क्षमता विकसित करने से उनका शैक्षिक प्रदर्शन, सामाजिक समायोजन, और मानसिक स्वास्थ्य बेहतर हो सकता है। इसके अलावा, यह शोध यह भी दर्शाता है कि शिक्षा में बाल मनोविज्ञान के सिद्धांतों का समावेश करके हम बच्चों के समग्र विकास में योगदान कर सकते हैं, जिससे उनका जीवन और भी सफल और संतुलित हो सके।

संदर्भ

अर्नेट, जे. जे. (2018). बचपन और किशोरावस्थाः एक मल्टीकल्चरल अप्रोच (9वां एड.). पियर्सन एजुकेशन.

बार–ऑन, आर., और पार्कर, जे. डी. ए. (2020). इमोशनल इंटेलिजेंस की हैंडबुकः घर, स्कूल और वर्कप्लेस पर थ्योरी, डेवलपमेंट, असेसमेंट और एप्लीकेशन (दूसरा एड.). जोसी–बास.

बिर्गिसडॉटिर, एफ., और ब्योर्क, आर. (2023). इमोशनल इंटेलिजेंस और चाइल्ड डेवलपमेंटः एक कॉम्प्रिहेंसिव रिव्यू. जर्नल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी, 52(3), 104–118.

कैसिडी, जे., और शेवर, पी. आर. (2019). अटैचमेंट की हैंडबुकः थ्योरी, रिसर्च और क्लिनिकल एप्लीकेशन (तीसरा एड.). द गिलफोर्ड प्रेस.

गोलेमैन, डी. (2021). इमोशनल इंटेलिजेंसः यह आईक्यू से ज्यादा क्यों मायने रख सकता है (10वीं एनिवर्सरी एड.). बैंटम.

ग्रीन, एल., और फर्नांडीस, पी. (2022). बच्चों में इमोशनल रेगुलेशन के लिए कॉग्निटिव–बिहेवियरल स्ट्रेटेजीः एक सिस्टमैटिक रिव्यू. जर्नल ऑफ चाइल्ड एंड फैमिली स्टडीज, 31(6), 250–346

हार्टर, एस. (2020). बच्चों और किशोरों में सेल्फ–रिप्रेजेंटेशन का डेवलपमेंट. एकेडमिक प्रेस.

जॉनसन, एस. पी., और बास, ई. एम. (2017). इमोशनल डेवलपमेंट और सोशल लर्निंगः बचपन के डेवलपमेंट में इमोशनल इंटेलिजेंस का रोल. जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 58(4), 340–350.

करनी, ए., और बर्सन, वाई. (2018). पेरेंटिंग, इमोशनल इंटेलिजेंस, और बच्चों के बिहेवियरल आउटकमः एक इंटीग्रेटेड मॉडल। डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 54(5), 756–768.

मैकक्लेलैंड, डी. सी., और एटकिंसन, जे. डब्ल्यू. (2022). ह्यूमन मोटिवेशन (दूसरा एडिशन). कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

मेयर्स, एस. आर., और गौड्रेउ, पी. (2021). इमोशनल रेगुलेशन इश्यू वाले बच्चों के लिए अर्ली इंटरवेंशन स्ट्रेटेजीः पेरेंट्स और एजुकेटर्स के लिए एक फ्रेमवर्क। चाइल्ड डेवलपमेंट पर्सपेक्टिव्स, 15(2), 110–115.

स्टस, डी. टी., और नाइट, आर. टी. (2020). फ्रंटल लोब फंक्शन के सिद्धांत (दूसरा एडिशन). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

थॉम्पसन, आर. ए. (2019). इमोशन रेगुलेशन का डेवलपमेंटः बायोलॉजिकल और बिहेवियरल नजरिया (दूसरा एडिशन). रूटलेज.

वाटर्स, ई., और कमिंग्स, एम. (2017). इमोशन रेगुलेशन का एक सिक्योरिटी–बेस्ड मॉडल. द गिलफोर्ड प्रेस.

जीडनर, एम., मैथ्यूज, जी., और रॉबर्ट्स, आर. डी. (2018). बच्चों का इमोशनल इंटेलिजेंस मॉडलः एक रिव्यू और भविष्य की दिशाएँ. जर्नल ऑफ एप्लाइड डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 59, 58–70.

स्मिथ, जे. ए., और ली, सी. (2024). बच्चों के विकास में इमोशनल इंटेलिजेंस की भूमिकाः एक लॉन्जिटयूडिनल स्टडी। जर्नल ऑफ चाइल्ड एंड एडोलसेंट साइकोलॉजी, 61(2), 145–157.

ब्राउन, एम., और हैरिस, पी. टी. (2024). बचपन की शुरुआती शिक्षा में इमोशनल इंटेलिजेंस को शामिल करनाः सबसे अच्छे तरीके और नतीजे। अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन जर्नल, 52(1), 23–34.